ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. NO.- 187-189

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- III, Issues-25, YEAR- July-Sept.-2022

सन्नाटे का शोर : कोरोना काल में लोक जीवन का संघर्ष

लेखनी सुमन

शोध अध्येत्री– हिन्दी अध्ययनशाला एवं शोध केन्द्र, महाराजा छत्रसाल बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, छतरपुर (म0प्र0) भारत

Received-02.08.2022, Revised-08.08.2022, Accepted-11.08.2022 E-mail: lekhanisuman25@gmail.com

सारांश:– ***'सन्नाटे का शोर' कृति डॉ. श्यामसुन्दर दुबे के कोरोना काल में लिखे गए ललित निबधों का संकलन है। आपके ललित निबंधों में लोक जीवन का केन्द्रीमय स्थान है। इसलिए स्वाभाविक है, कि दुबे जी के ललित निबंधों में लोक जीवन का अभिव्यक्तिकरण प्रचुरता से मिलता है। लेखक ने स्वयं ही अपने एक ललित निबंध में स्पष्ट किया हैं, कि उनकी शक्ति लोक से ही प्रेरित होती है।***

कुंजीभूत शब्द– सन्नाटे का शोर, संकलन, लोक जीवन, केन्द्रीमय स्थान, स्वाभाविक, अभिव्यक्तिकरण, ललित निबंध।

"मैं गाँव का आदमी हूँ। कभी–कभार महानगरों में माया–महलों की यात्रा कर लेता हूँ। मैं इन यात्राओं में अपनी लूटी–दूबरी देहाती दुनिया का पोटली काँख में दबाए रहता हूँ। इस अजूबे को प्रदर्शित करने के लिए मेरे मित्रगण मुझे आलीशान होटल में ले जाते हैं। मेरा 'लोक' उनका मनोरंजन करता है और बेशर्मी से दूँस– दूँसकर खाते हैं। वे मानते हैं, कि लोकगीत देशी ठर्रा है। इसके स्वाद से पेट का हाजमा ठीक हो जाता है।"[1]

डॉ0 दुबे ने अपनी इस आत्म स्वीकृति में यह स्पष्ट किया है, कि उनकी लोक चेतना आधुनिकता के साथ कैसे मुडभेड़ करती रही है। इस कथन से यह भी प्रकट होता है, कि महानगरों में लोक चेतना मनोरंजन का विषय बन गई है।

'सन्नोटे का शोर' ललित निबंध संकलन में कोरोना काल के उन प्रसंगों को अभिव्योक्ता किया गया है, जो बहुत ही भयाभय और त्रासद रहे हैं। लेखक अपने लोक जीवन को इसमें प्रतिष्ठित करना चाहते हैं, क्योंकि वे समाज के नैतिक मूल्यों की रक्षा और प्रकृति के संरक्षण के लिए प्रतिबद्ध है।

"सब कुछ ठीक–ठाक चल रहा था। सन् 2020 आया और सब उलट–पुलट होने लगा। चीन के बुहान प्रांत से निकला वायरस दुनिया में तहलका मचाने लगा। मौतों का सन्नाटा छाने लगा और शहर के शहर इस सन्नाटे में डूबने लगे। हमारे देश ने कोरोना की आहत सुनी तो लॉकडाउन की घोषणा हुई, जो जहाँ था – वहीं रुक गया। ट्रेन, हवाई जहाज, बस, ट्राम सबके चक्के स्थिर हो गये। यह पहला लॉकडाउन था। लगा जैसे देश को पक्षाघात हो गया है। पहला लॉकडाउन आशाओं की आसक्तियों से भरा था– इसलिए सहज ही कट गया, लेकिन दूसरे लॉकडाउन ने लोगों का धैर्य छीन लिया।"[2]

लेखक ने कोरोना काल में लोक जीवन के संघर्ष का वर्णन करते हुए। महामारी के कारण उत्पन्न समस्याओं एवं मानव मन की व्याकुलता का चित्रण इस प्रकार किया है, जिसमें परिवार, समाज, शिक्षा और अर्थव्यवस्था सब असहाय हो गये हैं। कोरोना काल में शहरों से गाँवों के मजदूरों का विस्थापन का यह दृश्य भीड़ का 'एकांतिक सन्नाटा' बनता जा रहा है।

"लॉकडाउन ने हमें जो एकांत दिया है वह भी कम भीड़–भाड़ वाला नहीं है। घर बंद है। दरवाजे आवाजाही के लिए तरस रहे हैं। किवाड़ों की कुंडियाँ छूते जी काँप रहा है। कहीं कोरोना वायरस इसमें न चिपका हो। लड़का परदेश में है। परदेश में प्राण सांसत में है। माँ–बाप गाँव में अपनी खोली में बैठे बिसूर रहे हैं। बेटा हर क्षण उनकी आँखों में आँसू बनकर झूल रहा है। सारे रिश्ते गीले हो रहे हैं। गाँव–घर में वेदना पिघलकर बँट रही है। कैसा होगा– मेरा पति, कैसा होगा मेरा भाई? मोबाईल दोनों ओर से घनघना रहे हैं। आँसू में बदलते बोल टेलीफोन के तारों में बँटने लगते हैं। गाँव–घर सोचता है– बस लौट आओ जैसे हो वैसे लौट आओ।"[3] लोक की आसक्ति का यहाँ घनीभूत चित्रण किया गया है। गाँव में बैठे माँ–बाप नगर में मजदूरी करते अपने बेटों के प्रति इस कठिन काल में कितने आसक्ति पूर्ण है। दुबे जी ने इसे बेहद भावनात्मक तरीके से प्रस्तुंत किया हैं। उन्होनें प्रवासी मजदूरों का पलायन इस रूप में किया है, कि अब वे दुःखी मन से गाँव की ओर लौट रहे हैं। अपने माँ–बाप परिवार से मिलने के लिए बहुत ही व्याकुल है। "इस कोरोना काल में समूचा संसार हतप्रभ है। एक अत्यत सूक्ष्म विषाणु ने मृत्यु का ताड़व रच दिया है। विज्ञान भौंचक है। ज्ञानी–ध्यानी स्तब्ध है। राजनीतिक क्षत्रप तेजोहत है। कोरोना काल का कोदंड बना सबको थर्रा रहा है। मुँह पर मुसीका कसे द्वार की अर्गला खोल रहे लोग दो गज जमीं के घेरे में एकांतिक हो रहें हैं। मृत्यु–भय से उपजा यह स्वेच्छिक निर्वासन मनुष्य के सामाजिक प्राणी होने पर प्रश्न चिह्न भी लगा रहा है। और यह आश्वस्ति दे रहा है, कि भविष्य का समाज सुरक्षित रखने के लिए निर्वासन भी जरूरी क्रिया है।"[4]

'कोरोना वायरस' अत्यंत सूक्ष्म है, लेकिन इस सूक्ष्म से वायरस ने सम्पूर्ण विश्व में अथल–पुथल मचा दी। कोरोना–एक वैश्विक महामारी के रूप में सामने आया जिसके कारण मनुष्य को अनेक प्रकार के संकटों का सामना करना पड़ा। इस महामारी ने मनुष्य के सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक एवं धार्मिक सभी पक्षों को प्रभावित किया है। कितने लोग इस महामारी से पीड़ित हुए

अनुरूपी लेखक/संयुक्त लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- III, Issues-25, YEAR- July-Sept.-2022

और कितने मृत्यु की शरण में गए। इस महामारी ने मनुष्य को अपना अस्तित्व बचाने के लिए मजबूर कर दिया है।

डॉ. दुबे ने कोरोना जैसी महामारी के साथ इस देश में आई हुई विभिन्न बिमारीयों की चर्चा की है। लोक जीवन में उन्हें याद आती है। चेचक महामारी चूँकि उस समय इतना वैज्ञानिक विकास नहीं था। इसलिए इस तरह की बिमारीयों के प्रकोप से बचने के लिए लोकजीवन में कुछ लोक आस्थाएँ विद्यमान थी एक ऐसी भी लोक आस्था का विवेचन करते हुए डॉ. दुबे ने अपने एक निबंध में चेचक की चर्चा की है।

"मुझे वे प्रसंग याद आ रहे हैं, जिनमें इसी जैसे विषाणुओं के प्रकोप से बचने के लिए अनेक प्रकार के पूजा–पाठ और तंत्र–मंत्र हमारे देश में किए जाते थे। चेचक जैसी महामारी से बचने के लिए देवी–पूजा और दुर्गा पाठ का महत्व था। मुझे बचपन में चेचक के प्रकोप को झेलना पड़ा था। मेरे समूचे गाँव के बच्चों को उस वर्ष चेचक ने धर दबोचा था। इनमें से कुछ बच्चों असमय में ही काल–कवलित हो गये थे।"[5] इस रूप में लेखक ने ग्रामीण जीवन की आस्थाओं का विवेचन किया है। आज भी लोकजीवन में आस्था का यह स्वरूप विद्यमान है। बावजूद इतने वैज्ञानिक विकास के ग्रामीण समाज में अभी भी अपने देवी–देवताओं पर विश्वास कायम है।

इस निबंध संकलन में प्रकृति की रक्षा और उसके सौन्दर्य का यत्र–तत्र विवेचन किया गया है। आपने अपने एक निबंध 'बाड़ी का कुम्हड़ा' में घरों के आस–पास बनाई जाने वाली बाड़ियों में रोपित किए जाने वाले पेड़–पौधों की चर्चा की है। "मुझे बचपन का वह घर नहीं भूलता है, जिसकी बाड़ी में सब्जी–भाजी, फल–फूलों का मेला सा लगा रहता था। मुझे सबसे अधिक प्रभावित करती थी कुम्हड़े की लता।

मेरी माँ पता नहीं कितने प्रकार के बीज वे आषाढ़ लगते–लगते बाड़ी में एक जगह वो दे देती थी। जब ये थोड़े बड़े हो जाते तब वे इन्हें वहाँ से उखाड़कर दूसरे स्थान पर रोप देती थी।"[6] लेखक ने इस रूप में लोक जीवन में प्रकृति के महत्व को स्पष्ट किया हैं। इसमें लोक जीवन की आत्म निर्भरता भी निहित है। ग्रामीण लोग अपने जीवन यापन के लिए अनेक प्रकार के प्रयास करते हैं।

"डॉ. श्यामसुन्दर दुबे लोक जीवन की चेतना से समग्र रूप से जुड़े हुए रचनाकार हैं। उन्हें साहित्य–सृजन की ऊर्जा और संवेदना लोकजीवन से प्राप्त हुई है। उनके साहित्य में आमजन के नैतिक अधिकारों के लिए संघर्ष की चेतना विद्यमान है। वर्तमान दौर में जहाँ जीवन शहरीकरण की प्रवृत्ति से घिर गया है, वहाँ लेखक ग्रामान्चल के जीवन की गहराई से पड़ताल करते हैं।"[7]

लोक की चेतना हमेशा निरन्तर चलती है। अभी भी लोकजीवन में चेतना एवं नैतिकता का महत्व है, लोक जीवन प्रकृति के उपासक है वो प्रकृति का संरक्षण करते हैं। दुबे जी के ललित निबंधों में यह दृष्टि सर्वत्र विद्यमान है। 'सन्नाटे का शोर' निबंध संकलन इसी दृष्टि का परिणाम है, इसमें कोरोना काल से जूझते लोक जीवन का मार्मिक चित्रण मिलता है।

"मनुष्य ने अनेक वायरसों पर विजय प्राप्त की है। कोरोना वायरस पर भी विजय प्राप्त कर लेगा, किन्तु विजय प्राप्ति की दुंदभी–वेला में उसे ये नहीं भूलना है, कि वैज्ञानिक प्रगति के चरम पर स्थित देश भी इस वायरस के आक्रमण से चरमरा गये।

संसार की द्वीपीय और देशीय सीमाओं को ध्वस्त करता यह वायरस बेरोकटोक बढ़ता रहा और अपने प्रकोप से सम्पूर्ण मानवता को थर्राता रहा। विश्व की महाशक्तियों ने इसके समक्ष हथियार डाल दिए थे। सब असहाय है। अब जगाने की जरूरत है–अपने भीतर के आस्था केन्द्रों की एवं एक ऐसे सांस्कृतिक परिवेश के निर्माण की जिसमें हमारी पृथ्वी का जो प्रदूषण रहित उज्ज्वल मुख चमक उठा है, वह और प्रकाशित हो– और हमारी आत्माओं में भी जागे वह सच्चा मानवीय भाव जहाँ भौतिक प्रतिस्पठर्धा प्रति हिंसा न बने।"[8] लेखक लोकजीवन में प्रकृति के महत्व को स्पष्ट करते हैं, तथा कोरोना महामारी के कारण उत्पन्न समस्याओं का मार्मिक चित्रण करते हैं। कोरोना जैसी महामारी जब अपने पैर पसारती है, तो सम्पूर्ण विश्व उसकी चपेट में आ जाता है।

प्रकृति ने मानव को जीवन निर्वाह करने के लिए एक से बढ़कर एक संसाधन दिए, लेकिन मनुष्य अपने लालच एवं स्वार्थ के चलते प्रकृति के साथ खिलवाड़ करता है। जिसके परिणाम स्वरूप कोरोना जैसी महामारी का जन्म हुआ। हालात ऐसे बन गए की मनुष्य को सीमाओं में बँधकर जीना पड़ा। इस महामारी ने एक बात स्पष्ट कर दी है, कि मुसीबत के समय में सम्पूर्ण विश्व एक साथ खड़े होकर एक–दूसरे का साथ देने के लिए तैयार है। आज यह उपयुक्त समय है। जब हमें प्रकृति के संरक्षण के लिए कदम उठाने होगें। नहीं तो हमें भविष्य में भयानक परिणाम जरूर देखने को मिलेंगे। 'सन्नाटे का शोर' ललित निबंध सकंलन कोरोना काल में उत्पन्न समस्याओं एवं संघर्षो को व्यक्त करता है, और भविष्य में उत्पन्न होने वाले संकटों के निवारण हेतु प्रकृति की उपासना तथा संरक्षण के लिए प्रेरित करता है।

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- III, Issues-25, YEAR- July-Sept.-2022

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. श्यामसुन्दर दुबे की सर्जना का लोकपक्ष, डॉ. प्रियंका राय, पृष्ठ 7.
2. सन्नाटे का शोर, श्यामसुन्दर दुबे, पृष्ठ 20.
3. सन्नाटे का शोर, श्यामसुन्दर दुबे, पृष्ठ 15,16.
4. सन्नाटे का शोर, श्यामसुन्दर दुबे, पृष्ठ 24.
5. सन्नाटे का शोर, श्यामसुन्दर दुबे, पृष्ठ 31.
6. सन्नाटे का शोर, श्यामसुन्दर दुबे, पृष्ठ 61.
7. श्यामसुन्दर दुबे के ललित निबंधों का रचना संसार, डॉ. मंजरी चतुर्वेदी, पृष्ठ 149.
8. सन्नाटे का शोर, श्यामसुन्दर दुबे, पृष्ठ 43.

*****